13. देहली में तुर्कों का राज्य बना

तुमने अक्सर पढ़ा होगा कि कोई राजा युद्ध में जीत गया या कोई और राजा हार गया। वास्तव में यद्ध में क्या-क्या होता होगा, सब अपनी-अपनी बात बताओ। अगर कोई यद्ध में जीते तो उसका कारण क्या हो सकता है - इस बात पर भी चर्चा करो।

महमूद गज़नी

उन दिनों की बात है जब भारत में कई छोटे बड़े राजा और सामन्त थे। उत्तर भारत में चौहाण, तोमर, गहड़वाल, चन्देल, चालुक्य जैसे वंशों के राज्य थे। ये अपने आपको राजपूत वंश कहते थे।

पृष्ठ 158 में दिए गए नक्शे में ईरान, अफगानिस्तान, खुरासान व तुर्किस्तान पहचानो।

हम इन जगहों की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वहीं से तुर्क लोग भारत में भी राज्य बनाने आए। उनका भारत आना कैसे हुआ? कौन राजा था जो भारत आया?

तुर्क लोगों द्वारा पहला बड़ा हमला तब हुआ जब महमूद गज़नी नाम के तुर्क राजा ने भारत पर हमला किया। पर वह भारत में राज्य नहीं बनाना चाहता था। उसकी नज़रें ईरान, अफगानिस्तान व खुरासान के क्षेत्र में ही दूसरे तुर्क राजाओं को हरा कर अपना राज्य बढ़ाने में लगी थीं।

जब महमूद गज़नी भारत में राज्य बनाना नहीं चाहता था फिर वह भारत क्यों आया? इसलिये कि वह अपनी सेना बनाने के लिए धन जुटाने की कोशिश कर रहा था। इस कोशिश में उसने सन् 1000 से सन् 1025 तक 17 बार विभिन्न राजपूत राज्यों पर आक्रमण किया। हर बार आकर वह धन लूट कर चला जाता था। इस सिलसिले में उसने कई राजाओं को हरा कर उनके धन पर कब्ज़ा किया। उन मंदिरों और बौद्ध मठों को तोड़ा व लूटा जिनमें बहुत धन दौलत इकट्ठी हुई थी।

तुर्क राजा आपस में लड़ते थे

मोहम्मद ग़ोरी

राज्य बनाने के इरादे से जो तुर्क राजा भारत आया उसका नाम था मोहम्मद ग़ोरी। वह अफगानिस्तान में ग़ोर नाम की जगह से आया था। मोहम्मद की लड़ाई एक दूसरे तुर्क राजा से चल रही थी। यह था खुरासान का शाह।

मोहम्मद और शाह दोनों तुर्क थे। पर दोनों ही एक दूसरे से लड़ कर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे। मोहम्मद ग़ोरी को लगा कि शाह से जीतना मुश्किल काम है, तो क्यों न कहीं और अपना राज्य फैलाएं?

पृष्ठ 164 के मानचित्र में ग़ोर और गज़नी ढूंढो। ये जगहें दिल्ली से किस दिशा में हैं?

महमूद गज़नी और मोहम्मद ग़ोरी के बीच तुम्हें क्या फर्क दिखा?

ग़ोरी ने सबसे पहले पंजाब में मुल्तान शहर पर आक्रमण किया और मुल्तान को हथिया लिया। फिर राजस्थान के रेगिस्तान से होते हुए वह गुजरात की तरफ बढ़ा। गुजरात उन दिनों एक बहुत ही सम्पन्न क्षेत्र था। मगर गुजरात में राज्य करने वाला चालुक्य वंश का राजा भीम, उसे रोकने में सफल हुआ। मोहम्मद मुश्किल से अपनी जान बचा कर लौटा।

मोहम्मद ने इस पराजय से हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी हार पर विचार किया और बहुत सोच समझके व तैयारी करके उसने पंजाब पर पहले कब्ज़ा करने की ठानी। 1190 तक पूरा पंजाब मोहम्मद के अधीन हो गया। भटिण्डा तक उसका शासन चलने लगा। वहां उसने अपने अधिकारी व सैनिक तैनात किए।

मोहम्मद ग़ोरी जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ -

क्या तुम नक्शा देख कर बता सकते हो कि मोहम्मद के लिए गुजरात की तुलना में पंजाब पर विजय पाना ज़्यादा आसान क्यों था?

नक्शा देख कर यह तालिका भी भरो–

सन् 1200 में उत्तर भारत के राज्य

	जगह	राजवंश
1.	अनहिलवाड़ा	
2.	अजमेर	
3.	देहली	
4.	कन्नौज	
5.	लखनउटी	
6.	खजुराहो	
7.	धार	

पृथ्वीराज चौहान

जिन दिनों ग़ोरी हमले कर रहा था उन्हीं दिनों अजमेर के चौहाण वंश के राजा भी अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। वे 1150 तक देहली के तोमर वंश को हरा चुके थे। पृथ्वीराज चौहाण ने बुन्देलखण्ड के चन्देल वंश के राजा को महोबा नाम की जगह पर हराया। इसी युद्ध में आल्हा और ऊदल लड़े थे और महोबा की रक्षा में उन्होंने अपनी जान गंवाई थी। उन्हीं की याद में आज भी सावन के महीने में आल्हा गाया जाता है।

क्या तुम्हें आल्हा और ऊदल की कहानी मालूम है? नहीं मालूम तो गुरुजी से पूछो।

तुर्क राजाओं की तरह राजपूत राजा भी आपस में लड़ते रहे थे। महोबा की जीत के बाद पृथ्वीराज कन्नोज के गहड़वाल राजा जयचन्द से लड़ना चाहता था। पर जयचन्द शक्तिशाली था और पृथ्वीराज की उससे लड़ने की हिम्मत नहीं हुई। तब पृथ्वीराज राज्य बढ़ाने के लिए गुजरात की तरफ बढ़ा। पर चालुक्य राजा भीम ने जैसे मुहम्मद को हराया था, वैसे ही पृथ्वीराज को भी हरा दिया।

राजपूत राजा आपस में लड़ते थे

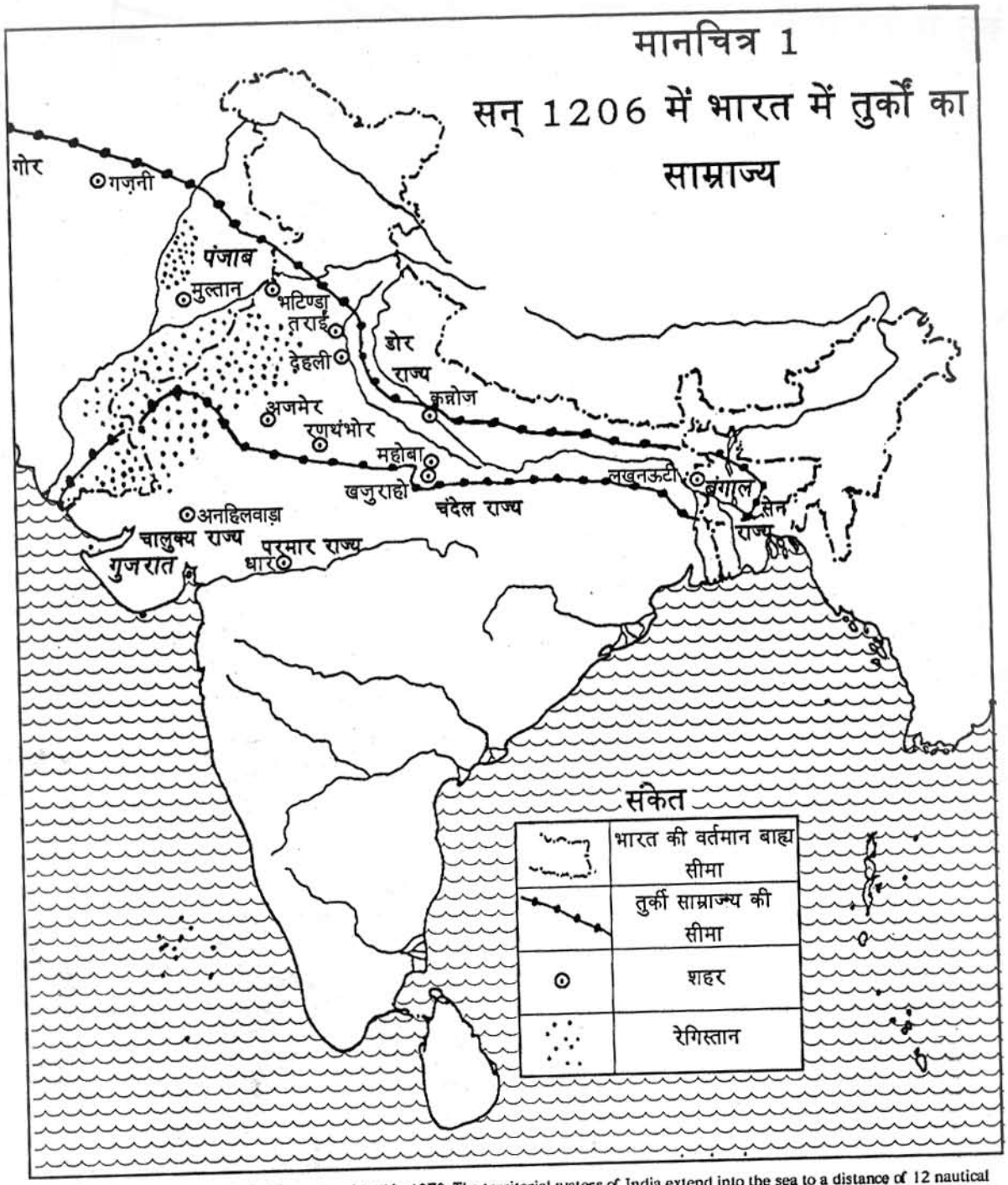

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

© Govt of India copyright.

पैमाना : 1 से. मी. = 200 कि. मी.

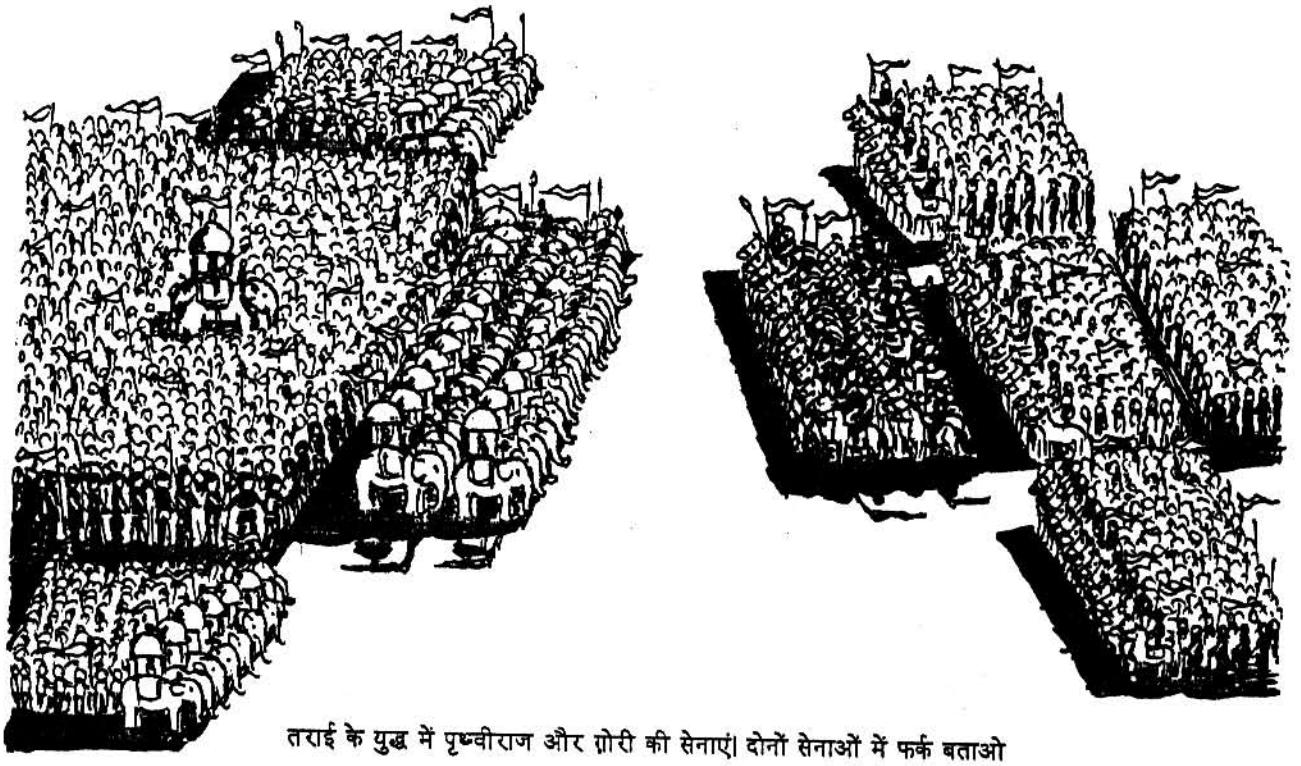

तराई के युद्ध में पृथ्वीराज और ग़ोरी की सेनाएं। दोनों सेनाओं में फर्क बताओ

पृथ्वीराज जिन जगहों पर राज्य करता था उन्हें नक्शे में इस चिन्ह से दिखाओ– — — —

भीम से हारकर पृथ्वीराज दिल्ली लौटा। अब वह राज्य विस्तार के लिए किस ओर बढ़े? उसकी निगाहें पंजाब की तरफ गईं। पर पंजाब में तो मोहम्मद ग़ोरी धाक जमाए था। अब स्वाभाविक था कि पृथ्वीराज और मोहम्मद के बीच युद्ध हो।

तराई का युद्ध

पृथ्वीराज ने भटिण्डा पर हमला बोलने की तैयारी कर ली। यह सुनकर मोहम्मद भी ग़ोर से अपनी सेना लेकर भटिण्डा पहुंचा। दोनों राजाओं की सेना तराई नाम की जगह पर 1191 में लड़ीं। मोहम्मद हार गया और जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। पृथ्वीराज ने भटिण्डा को अपने राज्य में मिला लिया।

एक साल तक मोहम्मद ने खूब तैयारी की और एक ताकतवर सेना जुटाई। 1192 में उसने फिर से पृथ्वी पर हमला बोला। पृथ्वीराज ने आसपास के राजाओं से मदद मांगी और उनमें से कुछ राजाओं ने मदद भी की। इस तरह पृथ्वीराज चौहाण के पास तीन लाख से अधिक सैनिक हो गए। मोहम्मद के पास केवल एक लाख बीस हज़ार सैनिक थे। लेकिन मोहम्मद के पास घुड़सवारों की बहुत ही मज़बूत पलटनें थीं। घोड़े और घुड़सवार दोनों मज़बूत इस्पात के कवच से लैस थे। वे बड़ी तेज़ी से, फुर्ती से आक्रमण कर सकते थे।

मोहम्मद ने तराईं से कुछ दूरी पर अपना डेरा डाला। वहां अपनी सेना की सारी भारी-भरकम चीज़ें- भोजन सामग्री, बैलगाड़ी आदि छोड़ दीं। साथ ही कुछ 10,000 घुड़सवार भी वहां तैनात किए ताकि ज़रूरत पड़ने पर बुलाया जा सके। बाकी सैनिकों के साथ वह तराईं पहुंचा।

युद्ध शुरू होने पर सेनाओं की स्थिति ऐसी थी। एक तरफ पृथ्वीराज की सेना थी। उसने अपनी सेना को चार भागों में विभाजित किया था। बीच में पृथ्वीराज अपनी टुकड़ी के साथ था। उसके आगे उसका सामन्त गोविन्दराय अपने हाथियों के साथ खड़ा था। पृथ्वीराज के दाएं और बाएं सेना की टुकड़ियां थीं। मोहम्मद के विपरीत पृथ्वीराज ने अपनी पूरी की पूरी सेना तराईं में ही तैनात कर दी थी।

गोविन्दराय पृथ्वीराज का सामन्त था- इस बात से तुम क्या समझते हो?

पृथ्वीराज की सेना के सामने मोहम्मद की सेना थी। उसने अपनी सेना को पांच भागों में बांटा था। पृथ्वीराज की तरह वह अपनी टुकड़ी के साथ बीच में था। उसके सामने शक्तिशाली घुड़सवारों व धनुष-धारियों की एक टुकड़ी थी। मोहम्मद के दाएं, बाएं व पीछे भी सेना की टुकड़ियां थीं।

चित्र में पृथ्वीराज कहां रहा होगा, मोहम्मद कहां रहा होगा और गोविन्दराय कहां रहा होगा?

गोविन्दराय ने आक्रमण शुरू किया। उसके हाथी तेज़ी से बढ़ कर आगे आए और मोहम्मद के सैनिकों को कुचलने लगे। इतने में मोहम्मद के घुड़सवारों ने आगे बढ़कर तीनों तरफ से हाथियों को घेर लिया और उन पर तीरों की वर्षा शुरू कर दी। घायल हाथी न आगे भाग पाए न दाएं न बाएं। वे बड़ी तेज़ी से मुड़कर पीछे की तरफ भागे। अब तुम ही सोचो पृथ्वीराज की सेना का क्या हुआ होगा?

जब पृथ्वीराज की सेना में हलचल मच गई तो मोहम्मद के घुड़सवार तेज़ी से दौड़ते हुए आगे बढ़े और पृथ्वीराज की पूरी सेना को घेर लिया। घुड़सवार पृथ्वीराज की सेना में भी थे पर वे तुर्क घुड़सवारों जैसे कुशल नहीं थे। उनके घोड़े भी उतनी अच्छी नस्ल के न थे। पृथ्वीराज की सेना में हाथी और पैदल सैनिक ही अधिक थे। आखिर तुर्क घुड़सवारों की तुलना में वे कितना तेज़ भागते? कई घंटों तक मारकाट, भागदौड़ चलती रही और अन्त में पृथ्वीराज हार कर भाग निकला।

तुर्कों की जीत के बाद

मोहम्मद ने पृथ्वीराज को अपना सामन्त बना लिया और उसे राज्य लौटा दिया। पर कुछ सालों बाद मोहम्मद ग़ोरी ने तय कर लिया कि वह हिन्दुस्तान में ही अपना राज्य जमाना चाहता है। वो पूरे उत्तर भारत को अपने कब्ज़े में करने की ठान चुका था। इसीलिए उसने पृथ्वीराज चौहाण को मार डाला और दिल्ली व अजमेर पर अपना अधिकार जमा लिया।

मोहम्मद ने पृथ्वीराज के बेटे को एक छोटे से क्षेत्र में राजा बना रहने दिया। मोहम्मद ने उसे रणथंभोर पर राज्य करने भेज दिया और वह खुद दिल्ली और अजमेर से राज्य करने लगा।

नक्शा देख कर बताओ कि दिल्ली और अजमेर पर नियंत्रण करने से मोहम्मद ग़ोरी दूसरे किन राज्यों पर हमला कर सकता था?

सन् 1207 तक तुर्कों ने किन-किन राज्यों को हरा कर अपने अधीन कर लिया– नक्शे में देखो।

जब किसी राजपूत राजा को हरा कर विजयी तुर्क उसकी राजधानी में प्रवेश करते थे तो अक्सर वहां के महलों व मंदिरों को लूट कर तोड़ डालते थे। वे इस्लाम धर्म मानते थे और इस्लाम धर्म के अनुसार ईश्वर के लिए मंदिर व मूर्ति बनाना ठीक नहीं माना जाता। तुर्क सुल्तानों यानी राजाओं को लगता था कि मंदिर व मूर्ति तोड़ कर उन्हें धार्मिक यश व पुण्य मिलेगा। मंदिर तोड़ने से वे हारे हुए लोगों पर अपनी जीत और ताकत भी जता पाते थे।

पर जब नई-नई जीत की खुशी का मौका बीत जाता और हारे हुए लोग तुर्कों का शासन स्वीकार कर लेते तो तुर्क सुल्तान उन्हें अपने टूटे हुए मंदिरों की मरम्मत करने देते थे। तब वे अपने राज्य के लोगों के साथ मुसलमान बनने की ज़ोर ज़बरदस्ती भी नहीं करते थे। उन्हें यह लगता था कि ऐसा करने से लोग उनका विरोध करेंगे और इस कारण वे अपना राज्य मज़बूत नहीं बना पायेंगे। इस बात का ज़िक्र उस समय के कई ग्रंथों में मिलता है।

अपना राज्य मज़बूत करने के लिए तुर्क सुल्तान हारे हुए राजाओं को सामन्त के रूप में भी नहीं रहने देते थे। वे हारे हुए राजाओं को हटा कर उनके राज्य पर खुद शासन करते थे। 15-16 सालों में तुर्कों ने भारत में अपना इतना बड़ा साम्राज्य कैसे बना लिया यह तुमने इस पाठ में देखा।

तुर्कों की जीत के कारणों पर विचार

तुर्कों की सफलता के बारे में इतिहासकार काफी विचार करते हैं। वे साचते हैं, यह कैसे संभव हुआ कि दूर ग़ोर से आया हुआ मोहम्मद 16 सालों के अंदर पंजाब से बंगाल तक अपना शासन स्थापित कर पाया और सब राजाओं को एक के बाद एक हराता चला गया। मोहम्मद ग़ोरी से पहले भी कई राजपूत राजा हुए थे जिन्होंने आसपास के कई राजाओं को हराया था। राजपूत राजा वीरता से लड़ने में बड़ा गर्व महसूस करते थे। पर यह कैसे हुआ कि तुर्क सेना वीर से वीर राजपूत सेना से भी श्रेष्ठ साबित हुई?

इतिहासकार इस बारे में छानबीन करते हैं और राजपूतों की हार व तुर्कों की जीत का अलग-अलग कारण बताते हैं। इतिहासकारों के बीच इस बात को लेकर सहमति नहीं है। चलो अब हम कुछ इतिहासकारों की बात पढ़ें और देखें कि किस का मत सही लगता है?

पहला मतः

"तुर्क लोग इस्लाम धर्म को मानते थे और वे भारत में इस्लाम धर्म की स्थापना के लिए आए थे। इसलिए वे बहुत जोश से लड़े। इस कारण वे जीते।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या राजपूतों को लड़ने में जोश नहीं रहता था?

क्या वास्तव में तुर्क लोग भारत के लोगों को मुसलमान बनाने के लिए आए थे? तो क्या उन्होंने ऐसा किया? क्या उन्होंने अपना राज्य स्थापित करने के बाद सब लोगों को मुसलमान बना दिया?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का यह पहला मत सही लगता है?

दूसरा मतः

"तुर्क लोगों में एकता थी, इसीलिए वे जीते। राजपूत लोग आपस में लड़ते थे, उनमें एकता नहीं थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन प्रश्नों पर विचार करो–

क्या तुर्क राजा आपस में नहीं लड़ते थे?

क्या तुर्क लोगों के पास ज़्यादा सेना थी, और राजपूत राजा के पास, भेद-भाव के कारण, कम सेना थी?

अब बताओ क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के कारण का दूसरा मत सही लगता है?

तीसरा मतः

"भारत में जाति व्यवस्था के कारण नीची मानी जाने वाली जातियों में बहुत असंतोष था। राजपूत राजा भी जाति-पाति बहुत मानते थे। तुर्क लोग मुसलमाऩ थे। वे जाति-पाति का भेद-भाव नहीं करते थे। इसलिए नीची मानी जाने वाली जातियों के लोगों ने उनका समर्थन व सहयोग किया। इसलिए तुर्क जीतते गए।"

इस मत को जांचने के लिए इन बातों पर विचार करो–

तुर्क लोग मुसलमान ज़रूर थे और छुआछूत में विश्वास भी नहीं करते थे। पर इसका यह मतलब नहीं था कि वे सब के साथ बराबरी का व्यवहार करते थे। मुसलमान होने के बावजूद वे इस बात पर गर्व महसूस करते थे कि वे तुर्क हैं। तुर्कों को वे सबसे श्रेष्ठ मानते थे। तुर्कों के अलावा दूसरे लोगों को वे अपने बराबर कतई नहीं मानते थे। अतः तुर्क लोग भले ही किसी को अछूत और अपवित्र न मानते हों पर उनमें दूसरों को अपने से नीचा मानने का घमण्ड था। राजपूतों को भी अपनी शक्ति और जाति का बहुत घमण्ड था।

इस बात को ध्यान में रखते हुए बताओ क्या तुम्हें यह तीसरा मत ठीक लगता है कि तुर्क राजपूतों से जीते क्योंकि उन्होंने अछूत माने जाने वाले लोगों का मन जीत लिया?

चौथा मतः

"तुर्क लोग इसलिए जीते क्योंकि उनके पास बेहतर सेना थी। उनके पास फुर्तीले घुड़सवार व घोड़े थे– राजपूतों की सेना भारी भरकम व धीमी थी। इसलिए वे हार गए।"

इस मत को जांचने के लिए तराई के युद्ध का वर्णन याद करो।

क्या तुम्हें तुर्कों की जीत के बारे में चौथा मत ठीक लगता है?

अगर फुर्तीले घोड़ों के कारण तुर्क सेना जीती तो मोहम्मद ग़ोरी पहले राजा भीम और पृथ्वीराज से कैसे हार गया था?

अभ्यास के प्रश्न

1. मोहम्मद गज़नी कहां राज्य बनाना चाहता था– ईरान, खुरासान या भारत में ?
2. मोहम्मद ग़ोरी किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
3. पृथ्वीराज चौहाण किन राजाओं से हारकर पंजाब में राज्य बनाने के लिए मुड़ा?
4. पृथ्वीराज चौहाण और मोहम्मद ग़ोरी ने कहां युद्ध लड़े? आज से कितने साल पहले? यह जगह किस शहर के पास है– कलकत्ता, भोपाल, दिल्ली, जबलपुर?
5. तुर्कों की सेना और राजपूतों की सेना में क्या फर्क था?
6. एक इतिहासकार का मत है कि राजपूत तुर्कों से इसलिए हारे क्योंकि उनमें एकता नहीं थी और वे आपस में लड़ते रहते थे।इस मत को तुम ठीक मानोगे या नहीं- कारण सहित समझाओ।
7. जीत के बाद तुर्कों के व्यवहार के बारे में चार महत्वपूर्ण बातें बताओ।